शोध–पत्र

अनुवाद और साहित्य

Translation & Literature

सारांश (Abstract)

अनुवाद एक भाषा में कही गई बात का दूसरी भाषा में संप्रेषण है। इस तरह अनुवाद का कार्य है–एक स्त्रोत भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी (लक्ष्य) भाषा में व्यक्त करना, किन्तु यह 'व्यक्त करना' बहुत सरल कार्य नहीं है। दरअसल हर भाषा विशिष्ट परिवेश में पनपती है, इसलिए उसकी अपनी अनेक–ध्वन्यात्मक, शाब्दिक, रूपात्मक, वाक्यात्मक, मुहावरे–लोकोक्ति विषयक आदि निजी विशेषताएं होती हैं। मनुष्य के व्यवहार, चिंतन अथवा बाह्य आकार–प्रकार में बहुत सी समानताएं हैं परन्तु दो भिन्न भाषाओं में यह समानता नहीं के बराबर होती है। अनुवाद मोटे रूप से चार प्रकार का होता है–**1. अखबारी अनुवाद 2. कार्यालयी अनुवाद 3. तकनीकी अनुवाद 4. साहित्यिक अनुवाद।** इसमें प्रथम तीन अनुवाद, अंतिम से इस बात में भिन्न होते हैं कि उन तीनों की मूल सामग्री 'तथ्य प्रधान' होती है, जबकि साहित्यिक अनुवाद की मूल सामग्री में तथ्य के साथ–साथ, अर्थ के स्तर पर **'भाव'** तथा अभिव्यक्ति के स्तर पर **'शैली'** के दो तत्व अतिरिक्त होते हैं। तथ्य–प्रधान सामग्री का अनुवाद करना अपेक्षाकृत सरल होता है, भाव–युक्त सामग्री का अनुवाद करना उससे कठिन होता है, किन्तु सबसे कठिन होता है शैली–प्रधान सामग्री का अनुवाद करना क्योंकि हर भाषा के शैलीय साधन समान नहीं होते। प्राचीन भारतीय साहित्य में अनूदित ग्रंथ प्रायः नहीं मिलते–कारण यह हो सकता है कि प्राचीन काल में साहित्य तथा ज्ञान–विज्ञान के जो मुख्य क्षेत्र थे–उन सभी में भारत काफी आगे था। हिन्दी में ग्रन्थों आदि के व्यक्तिगत अनुवादों की परम्परा 16वीं शताब्दी से मिलने लगती है–गीता, महाभारत, भागवत, पुराण, सत्य नारायण कथा, पंचतंत्र, हितोपदेश, नीतिग्रंथ, ज्योतिष के ग्रंथों के भी काफी अनुवाद हिन्दी में हुए हैं। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से हिन्दी में अनुवाद की समृद्ध परम्परा का भारतेन्दु युग से तेजी से प्रारम्भ हो गया था। शेक्सपीयर के नाटकों के अनुवाद की परम्परा भी हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग से ही शुरू हुई थी। संस्कृत के प्रायः अधिकांश ग्रंथों के अनुवाद हिन्दी में हो चुके हैं। हिन्दी में सर्वाधिक अनुवाद उपन्यास और कहानियों के हुए हैं। इनमें सबसे बड़ी संख्या अंग्रेजी से अनुवादों की है। मूल अंग्रेजी रचना से अनुवाद के अतिरिक्त काफी ऐसे अनुवाद भी हुए हैं जो अंग्रेजी में भी किसी अन्य भाषा से अनुवाद हैं। कुछ थोड़े अनुवाद सीधे फ्रेंच, रूसी, चैक, चीनी, अरबी, जापानी, नेपाली, जर्मन भाषा आदि से भी हुए हैं। भारतीय भाषाओं में सर्वाधिक अनुवाद बँगला, पंजाबी, तमिल तथा मराठी से हुए हैं। वस्तुतः अनेक अंशों में अनुवाद साहित्य की ही नहीं बल्कि भाषा की भी समृद्धि करता है क्योंकि दूसरी भाषा की लहरें अनुवाद की भाषा में आ मिलती हैं। इस बात का तो ध्यान रखना ही होगा कि कहीं दूसरी भाषाएँ हमारी भाषा हिन्दी को पूरी तरह आप्लावित न कर दें लेकिन इसके साथ ही इन भाषाओं की ओर मैत्री और सद्भावना का हाथ सदा आगे बढ़ाए रखना होगा। अनुवाद के माध्यम से ही भिन्न भाषा–भाषी न केवल कंधे से कंधा मिलाकर विश्व को आगे बढ़ा रहे हैं बल्कि एक दूसरे के सुख–दुख को अपना मानकर विश्वबंधुत्व की भावना को सुदृढ़ कर रहे हैं। इसलिए कठिनाइयों के बावजूद अनुवाद आज के युग की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।